om-21 shivratri-2014-final -print_Layout 4 1/20/2014 7:28 PM Page 1

शिव अवतरण

महाशिवरात्रि विशेषांक

ओम शान्ति मीडिया

परमात्मा का अवतरण भारत में...।

आर्यावर्त भारत देश का सर्वप्रथम सम्बोधन है, जिसका अर्थ है जहां श्रेष्ठ लोगों का निवास हो। अब ऐसे युग में जहां कलियुग नहीं कयुग का जमाना है, वहां श्रेष्ठ मानव की कल्पना भी नहीं की जा सकती। चार श्रेष्ठ युग; सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर तथा कलियुग, क्रमशः स्वर्णकाल, रजतकाल, कांस्ययुग तथा लौहयुग के नाम से भी जाना जाता है। इन्हीं चार युगों की समान आयु का जोड़ एक कल्प बनता है। आज कलियुग उस गृहयुद्धों को दर्शा रहा है, जिससे महाभारत की सम्पूर्ण स्थिति हमारे सामने आ रही है। इसी स्थिति को शास्त्रगत नियमों के अनुसार - परमात्मा कहते हैं जब विश्व की ऐसी मनोदशा होगी, उसी समय वह इस सृष्टि रंगमंच पर अवतरित होकर सभी आत्माओं का शुद्धिकरण कर उसे फिर से दिव्यता प्रदान करेगा। यही वह समय है, खोलिए उन नयनों को जो उसे ढूंढ़ रही हैं, क्योंकि वह आ चुके हैं भारत में।

शान्ति की तलाश में अनेक प्रयास करने के बावजूद भी मनुष्य न ही शान्ति और न ही सुख को प्राप्त कर सका। विश्व शान्ति की स्थापना का कार्य परमपिता परमात्मा का कर्तव्य है। वे ही शान्ति की स्थापना करते हैं। जब वो आते हैं तो करोड़ों में से कोई ही उसे जानते व पहचानते हैं। परमात्मा कब, कैसे और कहाँ आते हैं ? और कैसे कर्तव्य करते हैं ? यह जानना आवश्यक है। उसीका यादगार शिवरात्रि के रूप में मनाते हैं। शिव के अवतरण में रात्रि का क्या है संबंध? संसार के सभी ईश्वर-विश्वासी लोग मानते हैं कि भगवान कल्याणकारी है और इसलिए इस धरा पर अवतरित होते हैं लेकिन जब वो अवतरित होते हैं तो उसको शिवरात्रि के रूप में मनाते हैं। विश्व की सभी महान विभूतियों के जन्मोत्सव प्रायः जन्मदिन के रूप में मनाए जाते हैं, लेकिन एक परमात्मा शिव की जयन्ती ऐसी है जिसे जन्मदिन न कह शिवरात्रि के नाम से पुकारा जाता है। इसका अर्थ यह है कि परमात्मा शिव जन्म-मरण से न्यारे अथवा अयोनि हैं। उनका जन्म अन्य किसी महापुरुष या देवता की तरह लौकिक या साधारण नहीं होता है, कि उनका जन्मदिन मनाया जाए।परमपिता शिव की जयन्ती संज्ञावाचक नहीं बल्कि कर्तव्य वाचक है। उनका दिव्य अवतरण विषय-विकारों की कालिमा से लिप्त, अज्ञान निद्रा में सोये हुए मनुष्यों को जगाने के लिए होता है। शिवरात्रि फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को अमावस्या के एक दिन पहले मनाई जाती है। फाल्गुन मास वर्ष का अंतिम मास होता है और उसकी चौदहवीं रात्रि घोर अंधकार की निशानी है। इस दिन शिव रात्रि को अज्ञान अंधकार रूपी रात्रि के समय मनाने का आध्यात्मिक रहस्य यह है कि परमात्मा शिव ने कल्पान्त के घोर अज्ञानता रूपी रात्रि के समय पुरानी सृष्टि के महा परिवर्तन से थोड़ा समय पूर्व अवतरित होकर तमोगुण और पापाचार का विनाश करके, दुःख और अशान्ति को हरा था वहीं से सतोप्रधान, श्रेष्ठ और मर्यादा-पुरुषोत्तम दुनिया का आरंभ हुआ था।

भगवान हमारा हो सकता है क्या? क्या वह हमारी बातें सुन सकता है? कहते हैं कि कभी न कभी, किसी न किसी समय या किसी युग में उसने हमारी बातें भी सुनी, तो सुनी बातों का एक टुक जवाब भी दिया, लेकिन हमारी आज की कलुषित मानसिकता तथा कुछ भी तुरन्त प्राप्त कर पाने की इच्छा, उस परमशक्ति को भी चमत्कारिक रूप से अनुभव करने की है। ऐसा भी हो सकता है, यदि आप सुनियोजित तरीके से उसे सुनने वा देखने का प्रयास करें।

आज मैं जो कुछ आपसे कहने जा रहा हूं, उसे अपने चर्म चक्षु से नहीं, दिव्य चक्षु से देखने का प्रयास करें।

कैसे शुरु करता है वो अपना कार्य?

सर्वशास्त्र शिरोमणि श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित श्लोक "यदा यदा ही धर्मस्य, ग्लानिर्भवती भारत, अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम" के अनुसार परमात्मा ने इसके यथार्थ अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा कि जब धर्म की अति ग्लानि, अति पापाचार-भ्रष्टाचार इस सृष्टि पर अपने चरम पर पहुंच जाता है तब मैं इस भारत देश में एक साधारण मनुष्य तन में अवतरित होता हूँ। गीता में दिए गए अपने वचन को पूरा करने के लिए परमपिता परमात्मा शिव ने कर्य शुरु किया।

प्रजापिता ब्रह्मा की हुई दिव्य रचना

1876 में कृपलानी कुल में जन्मे दादा लेखराज का नामकरण करते हुए परमपिता परमात्मा शिव ने ही उन्हें "प्रजापिता ब्रह्मा" नाम दिया। इसके बाद 1936 में सिंध हैदराबाद स्थित दादा लेखराज के तन में 60 वर्ष की उम्र में प्रवेश किया। उनके मानवीय तन के माध्यम से संसार की समस्त आत्माओं को ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देकर उन्हें पतित से पावन, मनुष्य से देवता बनाने का कठिनतम कार्य शुरू कर दिया। एक ओर नई स्वर्णिम सृष्टि की स्थापना और

दूसरी ओर पतित, पुरानी दुनिया को परिवर्तन करने यानि दोनों कार्यों को सम्पन्न करने का काम साथ-साथ जारी है। अब परमपिता परमात्मा कलियुगी पतित, भ्रष्टाचारी दुनिया को सतयुगी पावन, श्रेष्ठाचारी नई दुनिया में परिवर्तन करने का कार्य सम्पन्न कर वापस परमधाम लौटने की ओर अग्रसर है साथ-साथ सभी आत्माओं की अब रिटर्न जर्नी है।

समय की गति को पहचानो

कलियुग अभी बच्चा नहीं बल्कि इसका समय समाप्त होकर वर्तमान समय जारी पुरुषोत्तम संगमयुग का समय भी खत्म होने की दिशा में अग्रसर है। परमात्मा से सुख-शांति की ईश्वरीय विरासत (वर्सा) लेने का समय बहुत थोड़ा बचा है। अब भी इस स्वर्णिम अवसर का लाभ लेने की बजाय यदि आपने इसे गंवा दिया तो सिवाय पछताने के आपके हाथ कुछ लगने वाला नहीं है, क्योंकि विश्व परिवर्तन का महानतम कार्य अब समाप्त होने वाला है। इसके स्थान पर इस भारत देवभूमि पर सर्वोत्तम संस्कृति और सभ्यता वाला नया भारत अपना स्थान ग्रहण करने के लिए बेताब है।

परमात्मा शिव कौन?

हम मानते हैं भारत देश में तेंतीस कोटि देवी देवता हैं, परन्तु इन सभी को बनाने वाला एक ही परमपिता परमात्मा शिव है, जिनकी अनेक धर्मों में, अनेक रूपों व अनेक नामों से पूजा की जाती है परन्तु उसका केन्द्र बिन्दु परमात्मा शिव के पास ही आकर समाप्त होता है। परमात्मा शिव देवों के भी देव महादेव, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता त्रिमूर्ति, तीनों लोकों के मालिक त्रिलोकीनाथ, तीनों कालों को जानने वाले त्रिकालदर्शी हैं। विश्व की सभी आत्माओं के परमपिता परमात्मा शिव हैं। परमात्मा जन्म मरण से न्यारे हैं, उनका जन्म नहीं होता बल्कि परकाया प्रवेश होता है। परमपिता शिव अजन्मा हैं, अभोक्ता, ज्ञान के सागर हैं, प्रेम के सागर, सुख के सागर हैं, उनका स्वरूप ज्योतिर्बिन्दु है। परमात्मा शिव परमधाम के निवासी हैं। शिव का अर्थ ही है 'कल्याणकारी'। परमात्मा शरीरधारी नहीं है। इसका मतलब ये नहीं कि उनका कोई आकार नहीं बल्कि स्थूल आंखों से न दिखने वाला सूक्ष्म ज्योति स्वरूप है। परमात्मा शिव को सभी ग्रंथों, पुराणों और वेदों में भी सर्वोपरी ईश्वर माना गया है।

कैसा रूप है उनका ?

विश्व के प्रायः सभी धर्मों के लोग परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास करते हैं। सभी मानते हैं कि परमात्मा एक है। परन्तु सबसे आश्चर्यजनक एवं विरोधाभासी

तथ्य परमात्मा के सम्बन्ध में एक ही मुंह से अनेक बातें हैं। परमात्मा के सम्बन्ध में असत्य, भ्रामक और एकांगी विचारों के कारण ही समाज में हिंसा, घृणा और तृष्णा का जन्म हुआ है।

यह संसार भ्रम संसार बन गया है। इसके साथ ही सभी धर्मों में सर्वशक्तिमान परमात्मा के बारे में एक बात सर्वमान्य है कि परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप है। इस सम्बन्ध में केवल भाषा के स्तर पर ही मतभेद है, स्वरूप के सम्बन्ध में नहीं। शिवलिंग का कोई शारीरिक रूप नहीं है क्योंकि यह परमात्मा का ही स्मरण चिन्ह है। शिव का शाब्दिक अर्थ है 'कल्याणकारी' और लिंग का अर्थ है प्रतिमा अथवा चिन्ह। अतः शिवलिंग का अर्थ हुआ कल्याणकारी परमपिता परमात्मा की प्रतिमा। प्राचीन काल में शिवलिंग हीरों (जो कि प्राकृतिक रूप से ही प्रकाशवान् होते हैं) के बनाए जाते थे, क्योंकि परमात्मा का रूप ज्योतिर्बिन्दु है। सोमनाथ के मन्दिर में सर्व प्रथम संसार के सर्वोत्तम हीरे कोहिनूर से बने शिवलिंग की स्थापना हुई थी।

विभिन्न धर्मों में भी परमात्मा को इसी आकार में मान्यता दी गई है। चाहे वे पत्थर, हीरों अथवा अन्य धातुओं की स्थाई रूप से मूर्तियां स्थापित न भी करें, लेकिन फिर भी पूजा-पाठ, प्रार्थना अथवा अन्य प्रवित्र अवसरों पर ज्योति स्वरूप परमप्रिय परमात्मा की स्मृतिमें अपने घरों अथवा धार्मिक स्थानों, मन्दिरों और गुरुद्वारों आदि में दीपक अथवा ज्योति को अवश्य जलाते हैं। भारत में विश्व के 12 प्रसिद्ध मठों को भी ज्योतिर्लिंग मठ कहा जाता है। इनमें हिमालय स्थित केदारनाथ, काशी में विश्वनाथ, सौराष्ट्र प्रदेश में सोमनाथ और मध्यप्रदेश के उज्जैन शहर में महाकालेश्वर अति प्रसिद्ध हैं।

मनुष्यों, देवताओं और परमात्मा के निवास स्थान को एक मानना सबसे बड़ी भूल

परमात्मा को जहां त्रिमूर्ति (तीन देवताओं का रचयिता), त्रिनेत्री (दिव्य बुद्धि रूपी ज्ञान का तीसरा नेत्र देने वाला), त्रिकालदर्शी (सृष्टि के आदि, मध्य तथा अन्त, तीनों कालों का ज्ञाता) आदि कहते हैं तो उसे त्रिलोकीनाथ अथवा त्रिभुवनेश्वर भी कहा जाता है। अतः तीन लोकों का अस्तित्व भी अवश्य होना चाहिए।

मनुष्य सृष्टि

मनुष्य सृष्टि अथवा स्थूल लोक जिसमें हम रह रहे हैं, यह आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इन पांचों तत्वों की ही सृष्टि है जिसे कर्म-क्षेत्र भी कहते हैं। यहां मनुष्य जैसा कर्म करते हैं वैसा फिर भोगते भी अवश्य हैं। अतः इस सृष्टि को विराट नाटकशाला अथवा लीलाधाम, जिसमें कि सूर्य और चांद मानो बड़ी-बड़ी बत्तियां हैं, भी कहा जा सकता है। इस सृष्टि में संकल्प, वचन तथा कर्म तीनों ही हैं। यह सृष्टि आकाश तत्व में अंशमात्र है। स्थापना, विनाश और पालना आदि परमात्मा के दिव्य कर्तव्य भी इसी लोक से सम्बंधित हैं।

अव्यक्त लोक - ब्रह्मा, विष्णु, शंकर पुरियां

सूर्य-चांद से भी पार इस मनुष्य लोक के आकाश तत्व के भी ऊपर एक और अति सूक्ष्म (अव्यक्त) लोक है जिसमें पहले सफेद रंग के प्रकाश तत्व में ब्रह्मपुरी, उसके ऊपर सुनहरे-लाल प्रकाश में चतुर्भुज विष्णु की पुरी और उसके भी पार महादेव शंकर की पुरी है। इन तीनों देवाताओं की पुरियों को मिलाकर इसे सूक्ष्म लोक कहते हैं। क्योंकि इन देवताओं के शरीर, वस्त्र और आभूषण आदि मनुष्यों के स्थूल शरीर और वस्त्र आदि की तरह पांच तत्वों से बने हुए नहीं है। बल्कि सूक्ष्म, प्रकाश तत्व के हैं। इन देवताओं को अथवा इनके लोकों को, इन स्थूल नेत्रों से नहीं देखा जा सकता, बल्कि दिव्य-चक्षु द्वारा ही इनका साक्षात्कार हो सकता है।

आत्माओं का निवास स्थान - परमधाम

देवताओं के सूक्ष्म लोक से भी ऊपर एक असीमित रूप से फैला हुआ तेज सुनहरे लाल रंग का प्रकाश है जिसको अखण्ड ज्योति महतत्व अथवा ब्रह्म-तत्व कहते हैं। यह तत्व पांच प्राकृतिक तत्वों क्रमशः पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश से भी अति सूक्ष्म है। इसका भी साक्षात्कार दिव्य-चक्षु द्वारा ही हो सकता है। ज्योतिर्बिन्दु रूप त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव और सृष्टि की सभी आत्माएं अव्यक्त वंशावली में निवास करती हैं। इस स्थान को ब्रह्मलोक, परमधाम, मुक्तिधाम, शान्तिधाम, निर्वाणधाम, मोक्षधाम अथवा शिवपुरी कहा जाता है। इस लोक में न संकल्प है, न कर्म है। सृष्टि-लीला की अनादि तथा निश्चित योजना के अनुसार जब किसी आत्मा का सृष्टि रूपी रंगमंच पर पार्ट होता है तभी वह नीचे साकार लोक में आकर शरीर रूपी वस्त्र धारण कर अपना अभिनय करने के लिए उपस्थित होती है। प्रायः दुःख अशान्ति के समय जब लोग परमात्मा से प्रार्थना करते हैं तो हाथ अथवा मुख ऊपर की ओर ही उठाते हैं क्योंकि जाने-अनजाने यह स्मृति परमपिता परमात्मा की है जो ऊपर परमधाम में निवास करते हैं।

कहाँ रहते हैं भगवान हमारे ?

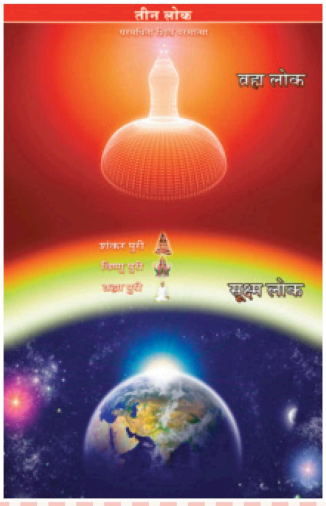

परमात्मा शिव ही हैं ज्ञान दाता

परमात्मा शिव, सामान्य मनुष्यों की तरह शरीरधारी नहीं हैं और जन्म-मरण के बन्धनों से मुक्त हैं। गीता में भगवान ने इस सम्बन्ध में कहा है - ''जो मुझे मनुष्यों की भांति जन्म लेने और मरने वाला समझते हैं वे मूढ़मति हैं'' (अध्याय 6, श्लोक 24, 25)। पुनः वे कहते हैं - ''मेरे दिव्य जन्म के रहस्य को न महर्षि, न देवता जानते हैं'' (अध्याय 10, श्लोक 2)। प्रायः सभी धर्मों के लोग निर्विवाद रूप से परमात्मा को 'ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप' और 'अशरीरी तथा जन्म-मरण रहित' तो स्वीकार करते ही हैं। अतः शिव का अन्य भाषान्तर 'गॉड', 'खुदा', 'ओंकार' इत्यादि है और 'शिवरात्रि' परमात्मा के दिव्य-अवतरण दिवस की यादगार है।

मैंने परमात्मा से सारे सम्बन्धों का रस लिया

विश्व कल्याणकारी शिव, मेरा बाबा है। भाग्यवान हैं जो भगवान हमको इतना ऊंचा पुरुषार्थ 21 जन्मों की ऊंची प्रालब्ध लेने के लिए संगमयुग पर ब्रह्मा तन में अवतरित होकर करा रहा है। मैं अकेली नहीं हूँ, भगवान मेरा साथी है। परमात्मा ने हमें हर एक सम्बन्ध का सुख दिया है। हम उसे जिस रूप में याद करते हैं वो उस रूप में हमारे साथ होता है। बाबा ने जन्म से मरने तक हमें कर्मों की गुह्यगति समझाई है। कर्म विकर्म अकर्म की गति बाबा का बनने से समझ में आई है। मुझे जीना है तो कैसे? मरना है तो कैसे? यह पक्का है। बाबा का बनने से ही जैसे शमा पर परवाना फिदा हो गया, मरजीवा जन्म है। इतने अच्छे कर्म बाबा ने सिखाये हैं, ब्रह्माबाबा कहता है शिवबाबा को याद करो और शिवबाबा कहता है ब्रह्माबाबा को फॉलो करो। अभी के हमारे कर्म 21 जन्मों के लिए राजाई दे रहे हैं। परमात्मा शिव हम बच्चों के लिए हथेली पर बहिश्त लाए है। अभी ही समय है पुरुषार्थ कर उस बहिश्त के अधिकारी बनने का। परमात्मा कहते हैं अभी नहीं तो कभी नहीं।

राजयोगिनी दादी जानकी,
मुख्य प्रशासिका, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय

ब्रह्माकुमारी संस्था सुसंस्कृत इन्सान का निर्माण करती है

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के माध्यम से आप सब लोग जो सेवा कर रहे हैं उस सेवा की महिमा के लिए मेरे पास कोई शब्द नहीं है, उस सेवा की कोई कीमत नहीं हो सकती है। ऐसी सेवा को मैं नमन करता हूं। इतना बड़ा त्याग करना आसान नहीं है। यह तो परमात्मा शिव की कृपा हमारे ऊपर हुई जो हम उनके सानिध्य में आ गये वरना ये सबके भाग्य में नहीं है। उसके लिए प्रालब्ध होना चाहिए, हमारा पुण्य कर्म संचित है, तभी हमें परमात्मा शिव बाबा के पास आने का सौभाग्य मिलता है। ब्रह्माकुमारीज़ के विद्यालय तो बहुत हैं, देश में हैं, विदेश में हैं, कम विद्यालय नहीं हैं। उन सब विद्यालयों का एक ही उद्देश्य है सुसंस्कृत इन्सान का निर्माण। हमने बहुत से लोगों का निर्माण किया है, डॉक्टर, इंजीनियर, वकील बनाये लेकिन जिस संस्कार की आवश्यकता थी वो हम नहीं दे पाये, लेकिन ये विद्यालय हर व्यक्ति चाहे वो कोई भी हो उसे बिना अपेक्षाओं के सुसंस्कृत इन्सान बनाने का कार्य कर रही है।

-अन्ना हज़ारे, प्रसिद्ध समाजसेवी